विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) : वर्ष 24 : अंक 6 : नई दिल्ली : 4-10 मई 2018

परमाराध्य आचार्यप्रवर अहिंसा यात्रा का कुशल नेतृत्व करते हुए सानंद सुखसातापूर्वक चेन्नई की और गतिमान हैं। आंध्रप्रदेश में मौसम के विविध रूप देखने को मिल रहे हैं। कभी गर्मी तो कभी वर्षा और कभी उमस अपना रंग दिखाती है। प्रकृति के विविध रूपों में भी आचार्यप्रवर का आत्मबल एक रूप रहता है। पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आचार्यप्रवर आगामी ६ मई को काकीनाड़ा, १४ मई को राजमुन्दरी, २८ मई को विजयवाड़ा और १ जून को गुन्टूर में पधार जाएंगे। आंध्रप्रदेश की यात्रा के उपरान्त आचार्यप्रवर जुलाई के प्रथम सप्ताह में तमिलनाडु में प्रवेश करेंगे। २१ जुलाई को चेन्नई के माधावरम् में पूज्यप्रवर का चातुर्मासिक प्रवेश पूर्व घोषित है।

परम श्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमण आंध्रप्रदेश में

उल्लासमय वातावरण में जन्मोत्सव-पट्टोत्सव के द्विदिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ

२४ अप्रेल। वैशाख शुक्ला नवमी। परमपूज्य आचार्यप्रवर का ५७वां जन्मदिवस। चतुर्विध धर्मसंघ में उल्लासमय वातावरण। प्रातः चार बजे से पूर्व ही प्रवास परिसर जनाकीर्ण बन गया। हर कोई पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित करने को बेताब था। पूज्यप्रवर चार बजे विराजमान हुए और कुछ ही क्षणों में प्रवास कक्ष के सम्मुख प्रवास परिसर में ही बने पंडाल में पधार गए। आचार्यप्रवर के पधारते ही पूरा परिसर मंगल जयघोषों और 'वन्दे गुरुवरम्' से गुंजायमान हो उठा। मुख्यमुनिश्री आदि मुनिवृन्द ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। तत्पश्चात् प्रस्तुतियों का क्रम प्रारंभ हुआ। श्रावक समाज की ओर से विभिन्न केन्द्रीय संस्थाओं, स्थानीय संस्थाओं द्वारा पूज्यचरणों में अपनी-अपनी भावांजलि अर्पित की गई। मुनिवृन्द ने भी अभ्यर्थना गीत का संगान किया।

सूर्योदय के आसपास पूज्यप्रवर के संसारपक्षीय सर्वज्येष्ठ भ्राता श्री सुजानमलजी दूगड़ आदि परिजन थाली बजाते हुए पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुए। सूर्योदय के उपरान्त आचार्यप्रवर अपने प्रवास कक्ष में पधार गए। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां व समणियां भी पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुंच गईं। महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर को वंदन करने के उपरान्त पूज्यप्रवर को निवेदन किया-- 'आचार्यप्रवर का जन्मदिन एक संस्कृति का जन्मदिन है। आचार्यप्रवर निरामय रहें और युगों-युगों तक इस धर्मसंघ की शासना करते रहें। हम सभी आपकी पावन शासना में साधना करते रहें।' साध्वीवृन्द और समणीवृन्द ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान कर आचार्यप्रवर को वर्धापित किया। दूगड़ परिवार के सदस्यों ने अपने कुलगौरव की वर्धापना में गीत प्रस्तुत किया। तत्पश्चात् पूज्यप्रवर के सम्मुख साध्वीप्रमुखाजी आदि तथा श्री सुजानमल जी दूगड़ की उपस्थिति में पूज्यप्रवर के जीवन प्रसंग चले।

वर्धापना में मुखरित हुए आस्थासिक्त भाव

आज का मुख्य प्रवचन कार्यक्रम परम पूज्य आचार्यप्रवर के ५७वें जन्मदिवस के संदर्भ में वर्धापना समारोह के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार

से हुआ। विशाखापट्टनम् तेरापंथ महिला मंडल और कन्या मंडल की सदस्याओं ने 'महाश्रमण अष्टकम्' का संगान किया। विशाखापट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के कोषाध्यक्ष श्री सुशील हिरावत, हैदराबाद प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री प्रकाश बरड़िया, श्रीमती शशि सुराणा ने आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में अपने मंगलभाव अर्पित किए। आचार्यप्रवर के संसारपक्षीय अग्रज श्री सुजानमल जी दूगड़ और श्री सूरजकरण दूगड़ ने अपने संसारपक्षीय अनुज को वर्धापित किया। पूज्यप्रवर के संसारपक्षीय परिवार के सदस्यों ने गीत का संगान करते हुए अपने कुलगौरव का अभिनंदन किया। विशाखापट्टनम् किशोर मंडल के सदस्यों ने गीत का संगान किया। विशाखापट्टनम् ज्ञानशाला, तेरापंथ किशोर मंडल और तेरापंथ कन्या मंडल ने मार्च पास्ट के माध्यम से पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी मनमोहक प्रस्तुति दी।

आचार्यप्रवर की संसारपक्षीया भतीजी साध्वी सुमतिप्रभाजी ने अपने भावपूर्ण विचार व्यक्त किए। साध्वी प्रमिलाकुमारीजी, साध्वी शशिप्रभाजी, साध्वी कौशलप्रभाजी, साध्वी आदित्यप्रभाजी, साध्वी विशालप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी नम्रताश्रीजी, समणी विनयप्रज्ञाजी, समणी संबोधप्रज्ञाजी और समणी मधुरप्रज्ञाजी ने पूज्यचरणों में अपने भाव सुमन समर्पित किए।

साध्वीवृंद ने गीत की सामूहिक प्रस्तुति के द्वारा पूज्यप्रवर की वर्धापना की। साध्वी ख्यातयशाजी और साध्वी मैत्रीयशाजी ने पूज्यप्रवर की अभिवंदना में गीत का संगान किया। संसारपक्ष में दक्षिण भारत से संबंधित साध्वियों ने पूज्यचरणों में अपनी भावांजलि अर्पित की। आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष श्री लूणकरण छाजेड़ और अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्ष श्रीमती कुमुद कच्छारा ने पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। मुनि राजकुमारजी, मुनि कोमलकुमारजी, मुनि हितेन्द्रकुमारजी, मुनि वर्धमानकुमारजी, मुनि नम्रकुमारजी, मुनि ध्रुवकुमारजी, मुनि विनम्रकुमारजी, मुनि केशीकुमारजी, मुनि नमनकुमारजी और मुनि पार्श्वकुमारजी ने आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना में अपनी-अपनी प्रस्तुति दी।

साध्वीवर्याजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परम श्रद्धेय आचार्य महाश्रमणजी की मनोगुप्ति, वचनगुप्ति और कायगुप्ति की साधना अनुत्तर है। आपका संयम भी अनुत्तर है। आपके भीतर ऋद्धियों-सिद्धियों का भण्डार है। न केवल जैन समाज, अपितु जैनेतर समाज भी ऐसे महर्षि को पाकर गौरव की अनुभूति कर रहा है। आपकी कषायविजय की साधना विलक्षण है। ऐसे महान गुरु को पाकर हम धन्य हैं। आपकी अप्रत्तता की साधना भी अनुत्तर है। आप अनाश्रव के साधक हैं। जन्मोत्सव की इस पुनीत बेला में मैं आचार्यप्रवर से यही आशीर्वाद चाहती हूं कि हम भी आपकी पावन शासना में आत्मगुप्ति, इन्द्रियदमन, कषायदमन, और अनाश्रव की दिशा में विकास करते रहें।'

मुख्य नियोजिकाजी ने अपने वक्तव्य में कहा--'परम पूज्य आचार्यप्रवर के कण-कण में लोक कल्याण की भावना समाई हुई है। आचार्यप्रवर अपने सुख की परवाह नहीं करते, लोक कल्याण के लिए आप हजारों किलोमीटर की पदयात्रा कर रहे हैं। मुझे तो वर्तमान में दूसरा कोई ऐसा योगी दिखाई नहीं देता, जो जनता के कल्याण के लिए इतनी कष्टसाध्य यात्रा कर रहा हो। आप आत्म कल्याण के साथ लोक कल्याण कर रहे हैं, इसलिए आप जनता के आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं। भारी भीड़ के बीच रहते हुए भी आचार्यप्रवर भीतर के प्रति बहुत जागरूक हैं।'

मैं भी बढ़ूं, आप भी बढें

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'आर्हत वाङ्मय में कहा गया है--

पच्छा वि ते पयाया, खिप्पं गच्छंति अमरभवणाइं।
जेसिं पिओ तवो संजमो य खन्ती य बम्भचेरं च।।

(जिन्हें तप, संयम, क्षमा और ब्रह्मचर्य प्रिय हैं वे शीघ्र ही स्वर्ग को प्राप्त होते हैं, भले ही वे पिछली अवस्था में प्रव्रजित हुए हों।)

एक संत जा रहा था। पहाड़ी मार्ग से विहार हो रहा था। एक के बाद दूसरा, दूसरे के बाद तीसरा पहाड़ था। उस पहाड़ी भूमि की यात्रा में उसने एक निर्झर को देखा। संत वहां खड़ा रह गया। झरने के बहते हुए पानी को निहारते हुए उसी में केन्द्रित हो गया। चिन्तन करते हुए तीन बातें संत के सामने आईं-

१. निर्झर गतिशील है।
२. निर्झर निर्मल है।
३. निर्झर उपयोगी है।

संत ने मनन किया कि तीन महत्त्वपूर्ण चीजें इस निर्झर से सीखी जा सकती हैं--गतिशीलता, निर्मलता और उपयोगिता। हम मनुष्य हैं। मनुष्य जन्म को बहुत महत्त्वपूर्ण बताया गया है। जीवन तो पशु भी जीते हैं, पर पशुओं का जीवन इतना महत्त्वपूर्ण नहीं होता, जितना महत्त्वपूर्ण जीवन आदमी का होता है। क्योंकि आदमी ही सर्वोच्च भूमिका अर्थात् चौदहवें गुणस्थान तक पहुंच सकता है। मनुष्य के सिवाय कोई पशु तो क्या कोई देवता भी उस स्थान को प्राप्त नहीं कर पाता। इसलिए मनुष्य को यह प्रयास करना चाहिए की वह अपने जीवन में गतिशील रहे, रुके नहीं, आगे बढ़ने का प्रयास करे। आदमी को तप के क्षेत्र में गतिशील रहना चाहिए उसे यह सोचना चाहिए कि यह जीवन बीत रहा है, इसमें मैंने कोई तपस्या की या नहीं? अब आगे मुझे और अधिक तपस्या के क्षेत्र में गतिशील होना है, रहना है। तपस्या उपवास, प्रहर, पांच अथवा छह विगय वर्जन आदि रूपों में हो सकती है। यह अनाहार का तप है। हमारे जीवन में अनाहार के तप का भी महत्त्व है। नमस्कारसहिता (नवकारसी) छोटा-सा तप है। यह तप भी जीवन के साथ जुड़ जाए तो प्रतिदिन आत्मा रूपी घट में धर्म का पैसा आता रह सकता है।

आदमी का जन्मदिन आता है। जन्मदिन के संदर्भ में उल्लास भी देखने को मिलता है। व्यक्ति स्वयं के मन में भी उल्लास हो सकता है और बधाई देने वालों के मन में भी उल्लास हो सकता है। हालांकि जन्म तो दुनिया की नियति है। एक पशु भी जन्म लेता है, एक चींटी भी जन्म लेती है, स्थावरकाय में निगोद के जीव भी जन्म लेते हैं, संसार का हर प्राणी जन्म लेता है। इसमें कोई विशेष बात नहीं। जन्म का महत्त्व नहीं होता। महत्त्व इस बात का है कि आदमी जीवन में करता क्या है?

कोई व्यक्ति साधु बनता है, वह दिवस उसके लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण होता है कि जन्मे तो सभी हैं, पर कोई-कोई व्यक्ति ही साधु बन पाए हैं। इसलिए दीक्षा दिवस जन्म दिवस की तुलना में बहुत-बहुत महत्त्वपूर्ण होता है कि आज के दिन अभिनिष्क्रमण हुआ था, गृहत्याग किया गया था।

साधुओं में भी किसी साधु का वह दिन महत्त्वपूर्ण होता है, जिस दिन वह किसी विशेष दायित्व को स्वीकार करता है। जैसे- परमपूज्य आचार्य तुलसी ने भाद्रव शुक्ला नवमी को आचार्य पद पर आरोहण किया था। हम लोग उस दिन को पट्टोत्सव के रूप में मनाते थे। मेरी दृष्टि में वह दिन गुरुदेव तुलसी के लिए एक बड़ा दिन था, जिस दिन उन्होंने धर्मसंघ की बागडोर संभाली थी। इसी प्रकार परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने माघ शुक्ला षष्ठी को जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की बागडोर संभाली थी, गुरुदेव तुलसी ने उन्हें दायित्व सौंपा था, वह दिन उनके लिए महत्त्वपूर्ण था।

जन्मदिवस आता है, इसका अर्थ है कि इस जीवन का एक वर्ष कम हो गया, चला गया। यों तो

उल्लास हो सकता है, किन्तु साथ में जिसका जन्मदिवस है, उस व्यक्ति के लिए ध्यान देने का एक मुद्दा हो सकता है कि पिछले साल मेरा जन्मदिवस आया था, आज फिर आया है तो मेरे इस महत्त्वपूर्ण मानव जीवन का एक साल और कम हो गया। यह जन्मदिवस तो मानों हमारे एक-एक साल को न्यूनता की ओर ले जाने वाला होता है। आदमी का ध्यान इस बिन्दु पर जाए कि समय तो बीत रहा है, मैं और ज्यादा कैसे गतिशील बनने या रहने का प्रयास करूं।

आदमी संयम में गतिशील बनने/रहने का प्रयास करे कि मेरे इन्द्रिय संयम, आहार संयम, विचार संयम, वाक् संयम आदि कैसे पुष्ट हों। संयम को पुष्ट बनाने की दिशा में हम गतिशील बनने का प्रयास करें।

आदमी सहिष्णुता के क्षेत्र में गतिशील बनने/रहने का प्रयास करे। शारीरिक प्रतिकूलता, दूसरों की ओर से अपमान, अच्छा कार्य करने पर भी होने वाले विरोध, निंदा आदि प्रतिकूल परिस्थितियों को सहने की दिशा में भी गतिशील रहना चाहिए। आदमी को अपने जीवन में कोई आदर्श बनाना चाहिए। उस आदर्श को प्राप्त करने और कायम रखने हेतु मनुष्य को कुछ कठिनाइयां झेलने के लिए भी तैयार रहना चाहिए। निंदा करने वाले भले निंदा करें, किन्तु आदमी को अपने आदर्श को नहीं छोड़ना चाहिए। उसके मनोबल में इतनी दृढ़ता रहे कि वह निंदा-प्रशंसा, लाभ-अलाभ, जीवन-मरण आदि प्रसंगों में भी अपने आदर्श से दूर न हो। उसे प्राप्त करने की दिशा में वह सतत गतिशील रहे।

आदमी को ब्रह्मचर्य की साधना में भी गति करने का प्रयास करना चाहिए। इस प्रकार तपस्या, संयम, तप और ब्रह्मचर्य--ये चार बातें प्रिय हैं तो जीवन के अंतिम भाग में दीक्षित होने वाला व्यक्ति भी उच्च गति को प्राप्त कर सकता है।

जीवन में गतिशीलता रहनी चाहिए। गतिशीलता होगी तो जीवन में निर्मलता भी आ सकेगी। जीवन में मलिनता नहीं रहनी चाहिए। 'भीतर में कुछ व बाहर में और कुछ' ऐसी वंचना करने का प्रयास आदमी न करे, सरलता को बनाए रखने का प्रयास करे, यह काम्य है। छलना-वंचना सचाई की साधना में बाधा है।

आदमी को अपने आपको किसी न किसी क्षेत्र में उपयोगी बनाना चाहिए। दक्षता, वैदुष्य का विकास करने का प्रयास करना चाहिए कि इस कार्य को मैं अच्छी तरह कर सकता हूं।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के जन्मदिवस आते, हम लोग उनके उपपात में भी बैठते। उस प्रंसग में हमें लंबे समय तक उनकी उपासना में स्थित होने का अवसर मिल जाता। उन्होंने अपने जीवन में बहुत परिश्रम किया। कहां राजस्थान और कहां कोलकाता, कहां राजस्थान और कहां दक्षिण भारत, कितनी पदयात्राएं गुरुदेव तुलसी ने की थीं। हमने देखा गुरुदेव अध्यापन, प्रवचन आदि में अपना श्रम नियोजित करते थे। जब मर्यादा महोत्सव का समय आता तो वे उन दिनों में संघीय कार्यो में कितने व्यस्त हो जाते। परममूज्य आचार्य महाप्रज्ञ जी को भी हमने देखा।

मेरा यह सौभाग्य रहा कि मुझे दोनों गुरुओं के ज्यादा निकट रहने का मौका मिला, उनकी सघन छत्रछाया में मुझे पलने का मौका मिला। करीब बारह वर्ष की अवस्था में मैं साधु बन गया। संसारपक्षीय पिता श्री झूमरमलजी का साया तो मुझे कम मिला। मुझे ज्ञात हुआ कि उनकी जन्म शताब्दी संपन्न हो गई। मेरे मन पर आज भी उनका कुछ प्रभाव लग रहा है। उनका भी अपना व्यक्तित्व था। मेरी संसारपक्षीया मां नेमांदेवी का साया मुझे कुछ अधिक मिला। उनका भी अपना कुछ वैशिष्ट्य संभवतः रहा होगा।

आदमी के लिए विशेष बात यह कि वह जीवन में आगे बढ़ने का प्रयास करे। जिसे कुछ बनना है, होना है, उसे कुछ प्रतिस्रोत में चलने का प्रयास करना चाहिए। अनुस्रोत में चलना आसान और स्रोत के विरुद्ध बहना मुश्किल होता है। कुछ बनने के लिए प्रतिस्रोत में चलना आवश्यक होता है।

साध्वीप्रमुखाजी, साधु-साध्वियों, समणियों और भी कितने-कितने लोगों ने मुझे मंगलकामनाएं दी हैं, गुणोत्कीर्तन किया है या देने वाले हैं। मैं आप सबका आभारी हूं। आप सबकी मंगल भावनाएं मुझे प्रेरणाएं दें, मैं अपने जीवन में और विकास कर सकूं। मैं अपनी आत्मा की दृष्टि से आगे बढ़ सकूं। आगम-स्वाध्याय, सेवा आदि-आदि में जितना समय लगा सकूं, वह लगाता रहूं।

परमपूज्य आचार्य भिक्षु, परमपूज्य गुरुदेव तुलसी, परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी आदि का साया, प्रेरणा, प्रोत्साहन, संकेत आदि यथौचित्य रूप में मिलता रहे। मै भी आगे बढूं और आप सब भी आगे बढें। मंगलकामना।'

स्थानीय सांसद श्री के. हरिबाबू ने कहा--'मैं अपनी ओर से तथा विशाखापट्टनम् की समस्त जनता की ओर से अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री के चरणों में ५७वें जन्म दिवस के अवसर पर हार्दिक शुभकामनाएं समर्पित करता हूं। आप जैसे महापुरुष का जन्मोत्सव मनाने का सौभाग्य प्राप्त कर यह धरती पावन हो गई, धन्य हो गई। ऐसा शुभ अवसर प्राप्त कर हम सभी अत्यन्त आनंदित हैं। आचार्यश्री ने अब तक हजारों किलोमीटर की पदयात्रा करते हुए लाखों-करोड़ों लोगों के बीच अपने मिशन को प्रभावी ढंग से फैलाया है। मैंने आज आपकी एक पंक्ति पढ़ी, जिसमें लिखा था--'शांति को बनाए रखने के लिए सच को नहीं छोड़ना चाहिए।' आज के युग में इस सोच की बहुत आवश्यकता है। आचार्यश्री शांति और सद्भावना की स्थापना के लिए जो महान पदयात्रा कर रहे हैं, इसमें हम सबको यथासंभव अपनी सहभागिता करनी चाहिए। आज के दिन मैं यही शुभकामना करता हूं कि आचार्यश्री शतायु-दीर्घायु हों, निरामय रहें, ताकि आप लंबे समय तक मानव-मानव का उद्धार करते रहें। इस मंगलमय अवसर पर मैं आपको श्रद्धापूर्वक नमन करता हूं।'

उत्तर विशाखापट्टनम् के विधायक श्री विष्णुकुमार राजू ने कहा--'आचार्यश्री के जन्मोत्सव के अवसर पर मैं मेरे क्षेत्र के सभी लोगों की ओर से आचार्यश्री के चरणों में शुभकामनाएं अर्पित करता हूं। आपके पदार्पण से न केवल विशाखापट्टनम् में, अपितु पूरे आंध्रप्रदेश में सुख-शांति व्याप्त होगी।'

जलगांव से समागत श्रीमती मंजुदेवी दूगड़ ने पूज्यप्रवर से ३२ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। तेलगू भाषा में अनूदित पूज्यप्रवर की तीन कृतियां--'आओ हम जीना सीखे', 'रोज की एक सलाह' और 'दुःख मुक्ति का मार्ग' पूज्यप्रवर के समक्ष लोकार्पित की गईं। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

जन्मोत्सव पर आर.एस.एस. के सरसंघचालक श्री मोहनराव भागवत का भावपूर्ण पत्र

कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के क्षेत्रीय कार्यवाह डॉ. रामकृष्ण, विभाग प्रचारक श्री नवीनजी, विज्ञान विहार के सेक्रेट्री श्री भागचन्द अग्रवाल ने पूज्यप्रवर के दर्शन किए। वे पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव के संदर्भ में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के सरसंघचालक श्री मोहन भागवत द्वारा प्रेषित पत्र भी साथ लाए थे। मुनि दिनेशकुमारजी ने उसका वाचन किया। श्री भागवत द्वारा प्रेषित पत्र के अंश इस प्रकार हैं--

'आज दिनांक २४ अप्रेल मंगलवार वैशाख शुक्ला ६ का दिन परमश्रद्धेय आचार्यश्री महाश्रमणजी का जन्मदिवस है, यह सूचना प्राप्त हुई। आजकल के उथल-पुथल भरे विपरीत प्रभाव वाले वातावरण में आचार्यश्री जैसे महामनीषीजी का समाज में सतत संचार हम देशवासियों का परम सौभाग्य है। वातावरण के विपरीत प्रभावों से समाज को मुक्त करने वाला उनका भारतीय संस्कृति के मूल्यों का सटीक समयोचित तथा परिणामकारक प्रतिपादन तथा जीवन के क्षण-क्षण में उन मूल्यों के आचरण का

प्रत्यक्ष उदाहरण समाज की नीति, संस्कृति व संतुलन को बनाये रखने वाला अतिमहत्त्वपूर्ण संबल है। श्रद्धा व कृतज्ञतापूर्वक उनकी इस आत्मीय कृपा के प्रति विनत होकर उनके उपदेशों का अनुकरण करने की योग्यता प्राप्त करने के लिए हम सभी को प्रयासरत रहना चाहिए। परमश्रद्धेय आचार्यश्री के चरणों में मेरा अभिवादन तथा उनके दीर्घायुरारोग्य के लिए प्रार्थना करता हूं।

आपका

मोहन भागवत

एकादशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर का नौवां पट्टोत्सव

२५ अप्रेल। वैशाख शुक्ला दशमी। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यप्रवर का नौवां पदाभिषेक दिवस। चारों ओर प्रसन्नतामय वातावरण। पश्चिम रात्रि में अर्हत वंदना से पूर्व मुनिवृन्द ने मुख्यमुनिश्री द्वारा रचित गीत 'शान्तिदूत की जय हो जय' का संगान कर पूज्यप्रवर को वर्धापित किया।

सूर्योदय के उपरान्त महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियां पूज्य सन्निधि में उपस्थित हुईं। पूज्यप्रवर को वंदन करने के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी ने नई प्रमार्जनी पूज्यप्रवर को उपहृत करते हुए निवेदन किया- यह प्रमार्जनी इस बात का प्रतीक है कि पूज्यप्रवर हमारी कर्मरूपी रजों का प्रमार्जन कर हमारी आत्मा को शुद्ध बनाएं।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने उस प्रमार्जनी को कंधों पर धारण किया तो उपस्थित साधु-साध्वियों व समणियों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। वर्धापना के क्रम में साध्वी आस्थाश्रीजी ने आचार्यप्रवर को 'रजोहरण' समर्पित किया।

आचार्यप्रवर ने उनसे पूछा--'रजोहरण तुमने बनाया?'

साध्वीजी--'तहत् गुरुदेव।'

आचार्यप्रवर--'देखो, तुमने रजोहरण बनाया, अच्छा है। एक रजोहरण निर्माण के साथ एक दीक्षार्थी भी तैयार कर लो तो रजोहरण बनाना और ज्यादा सार्थक हो सकता है।'

साध्वीजी--'तहत् गुरुदेव! प्रयास करने का भाव है।'

तत्पश्चात् साध्वीवृन्द ने पूज्यप्रवर की वर्धापना में गत कल सूर्योदय के बाद स्वयं द्वारा गाए गए गीत के क्रम को आगे बढाते हुए नए अंदाज में पूज्यप्रवर से बख्शीश की प्रार्थना की। तदुपरान्त समणीवृन्द ने आचार्यप्रवर की वर्धापना में गीत का संगान प्रांरभ किया--'चादर भिक्षु की' समणीवृन्द ने कई वर्षों पूर्व इस गीत को प्रस्तुति दी थी। पूज्यप्रवर इस गीत को भी अवधानपूर्वक सुन रहे थे। अचानक आचार्यप्रवर ने साध्वीवर्याजी से कहा-'इनसे (समणियों) से पूछो कि चादर नई है कि पुरानी? (गीत नया है या पुराना)'

साध्वीवर्याजी-'तहत् गीत तो पुराना है। मैं जब समणी थी, तब यह गीत गाया गया था।'

आचार्यप्रवर--'नई चादर ओढाओ तब तो अच्छी बात है, पुरानी क्यों ओढाती हो।' (नया गीत गाओ तब तो अच्छी बात है, पुराना क्यों गाती हो) समणीवृन्द की ओर मुखातिब होकर आचार्यप्रवर ने कहा- देखो, साध्वीप्रमुखाजी ने अभी हमें नई प्रमार्जनी भेंट की। इसी प्रकार चादर (गीत) भी नई होनी चाहिए। कुछ समय उपरान्त आचार्यप्रवर ने समणीवृन्द को आशीर्वाद की भाषा में फरमाया--'कार्य में नवीनता आती रहे।' इस प्रसंग से न केवल समणीवृन्द, अपितु अन्य दर्शक और श्रोता व्यक्ति भी अपनी रचनात्मक शक्ति के विकास की प्रेरणा प्राप्त कर रहे थे।

पट्टोत्सव पर साधु-साध्वियों व समणश्रेणी के सदस्यों को बख्शीशे

साध्वीप्रमुखाजी ने साध्वीवृन्द द्वारा की गई बख्शीश की प्रार्थना को पुनः दोहराया तो आचार्यप्रवर ने बख्शीश प्रदान करते हुए कहा--'नौवें पट्टोत्सव के उपलक्ष में हमारे धर्मसंघ के सभी साधु-साध्वियों को १११-१११ कल्याणक तथा औषध व 'यचा' से संबंधित सपूर्ण लगान से तीन महीने के लिए मुक्ति की बख्शीश की जा रही है और समणश्रेणी के वर्तमान सदस्यों की यदि भविष्य में संयम यात्रा होती है तो उनके लिए यह फंड भविष्य निधि के रूप में स्थापित किया जा रहा है।'

पूज्यप्रवर की इस बख्शीश को सुनकर एक श्रावक पूज्यप्रवर के समक्ष उपस्थित हुआ और बोला-'गुरुदेव! आपने साधु-साध्वियों व समण-समणियों को बख्शीश दी, हमें भी कुछ दें। आचार्यप्रवर ने उसे फरमाया--'आप शनिवार की सायं सात से आठ बजे के बीच सामायिक करने का लक्ष्य रखें।'

शांतिदूत आचार्य महाश्रमण विहार का लोकार्पण

परमपूज्य आचार्यप्रवर और महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी आदि का प्रवास आई.आई.ए.एम. इंस्टिट्यूट परिसर में हो रहा है। पूज्यप्रवर प्रातः परिभ्रमण से पूर्व आई.आई.ए.एम. इंस्टिट्यूट के चेयरमेन श्री रवीन्द्र अलवरदास की प्रार्थना पर साध्वीप्रमुखाजी आदि साध्वियों के प्रवास स्थल की इमारत के निकट पधारे। पूज्यप्रवर के जन्मोत्सव के उपलक्ष में इस इमारत को शांतिदूत आचार्य महाश्रमण विहार के रूप में लोकार्पित किया गया। आचार्यप्रवर से मंगलपाठ का श्रवण कर श्रीदास ने इमारत के नाम से युक्त शिलापट्ट का अनावरण कर भवन का लोकार्पण किया।

अपने व्यक्तित्व और कर्तृत्व की सौरभ से संघ, समाज व राष्ट्र को महका रहे हैं आचार्यप्रवर

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम पूज्यप्रवर के नवें पट्टोत्सव के संदर्भ में वर्धापना समारोह के रूप में आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रांरभ पूज्यप्रवर के मंगल महामंत्रोच्चार से हुआ। आर्षवाणी में 'आचार्य अभिवंदना' कर चतुर्विधधर्मसंघ ने पूज्य चरणों में अपनी प्रणति अर्पित की। साध्वी कार्तिकयशाजी, साध्वी आरोग्यश्रीजी, साध्वी सुषमाकुमारीजी, साध्वी शुभ्रयशाजी, साध्वी स्वस्तिकप्रभाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, साध्वी कमनीयप्रभाजी, साध्वी समताप्रभाजी, साध्वी सुनन्दाश्रीजी, शासनगौरव साध्वी कल्पलताजी, शासनश्री साध्वी जिनप्रभाजी, समणी नियोजिका चारित्रप्रज्ञाजी, समणी कुसुमप्रज्ञाजी, मुनि प्रिंसकुमारजी, मुनि हेमराजजी, मुनि कुमारश्रमणजी, मुनि गौरवकुमारजी, मुनि रजनीशकुमारजी और मुनि सुधांशुकुमारजी ने पूज्यप्रवर की वर्धापना में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। साध्वियों ने सामूहिक रूप में गीत का संगान कर पूज्यप्रवर का अभिनंदन किया।

समणीवृंद ने गीत के द्वारा अपने आराध्य की अभ्यर्थना की। मुनिवृंद ने आचार्यप्रवर के अभिनंदन में गीत का संगान किया।

तेरापंथ विकास परिषद् के सदस्य श्री पदमचन्दजी पटावरी, विशाखापट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के मंत्री श्री विमल कुंडलिया, तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष श्री हंसराज बेताला, कल्याण परिषद् के संयोजक श्री विनोद बैद ने आचार्यप्रवर के अभिनंदन में अपने हृदयोद्गार व्यक्त किए। चेन्नई ज्ञानशाला परिवार ने अपनी प्रस्तुति के द्वारा अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी।

महाश्रमणी साध्वीप्रमुखाजी ने अपने उद्बोधन में कहा--'आज का दिन भगवान महावीर और आचार्यश्री महाश्रमणजी से जुड़ा हुआ है। आचार्यश्री महाश्रमणजी के व्यक्तित्व को व्याख्यायित करने के लिए

मुझे कोई उपमा नहीं मिल रही है। मैं बस इतना कह सकती हूं आचार्यश्री महाश्रमणजी आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे ही हैं। आपकी प्रतिभा बेमिसाल और बहुमुखी है। महामहिम आचार्यप्रवर अपने शाश्वत सत्यों के संगायक व्यक्तित्व और अपने बहुआयामी कर्तृत्व की सौरभ से धर्मसंघ, समाज और देश को महका रहे हैं। आचार्यप्रवर के जीवन का हर क्षण अध्यात्म की साधना में और जैन शासन की प्रभावना में नियोजित हो रहा है। आपका कर्तृत्व अनूठा है। उसे वाणी का विषय बनाना संभव नहीं। आचार्यप्रवर अपनी उत्कृष्ट साधना, विशिष्ट चिंतन और अपने विशिष्ट कार्यों से जैन शासन की प्रभावना कर रहे हैं, तेरापंथ धर्मसंघ की महिमा बढ़ा रहे हैं और जनहित के लिए अपना जीवन समर्पित करके चल रहे हैं।

शासन गौरव मुनिश्री बुद्धमल्लजी स्वामी ने आचार्य भिक्षु के व्यक्तित्व को तीन उपमानों से व्याख्यायित किया--पुस्तक, नदी और इक्षु। मुझे ऐसा लगा कि आचार्यश्री महाश्रमणजी के जीवन को भी इन्हीं तीन उपमानों से कुछ-कुछ व्याख्यायित किया जा सकता है। आचार्यप्रवर के जीवन की पुस्तक का प्रत्येक पृष्ठ, उनकी एक-एक पंक्ति और उनका एक-एक शब्द हम सबके लिए प्रेरणादायक है। हम उन्हें पढ़ें, समझें और आत्मसात् करने का प्रयत्न करें तो हम भी अध्यात्म की दिशा में ऊर्ध्वारोहण कर सकते हैं। आचार्यप्रवर का जीवन नदी के प्रवाह की भांति निरंतर गतिशील है। आपकी संयम यात्रा की प्रत्येक लहर प्यास और संत्रास का हरण करने वाली है। लाखों-लाखों लोग आपकी सन्निधि में आकर तृप्ति और शांति का अनुभव करते हैं। लोगों के सूखते हुए जीवन को आप सरसब्ज बना देते हैं। आचार्यप्रवर जनकल्याण के लिए यात्रा कर रहे हैं। इस यात्रा के दौरान व्यापक जनसंपर्क हो रहा है। आपके जन संपर्क से संबंधित इतनी घटनाएं हैं, वे इक्षु के छोटे-छोटे पौरों की भांति सरस हैं, सुमधुर हैं और मानसिक और आध्यात्मिक दृष्टि से बलदायक हैं।

परमपूज्य आचार्यप्रवर का आज पदाभिषेक दिवस है। पदाभिषेक दिवस के दिन राजा उपहार लेते भी हैं तो देते भी हैं। हम भी आपको कुछ देना चाहते हैं। आप पदार्थों से प्रसन्न नहीं होते हैं। चतुर्विध धर्मसंघ और विशेष रूप से आपकी अन्तरंग परिषद् के इन साधु-साध्वियों का मन आपके चरणों में समर्पित हैं। इनके मन पर आपका अधिकार रहे। मेरा मन भी आपके चरणों में समर्पित है ही, आज के दिन उसे विशेष रूप से समर्पित कर रही हूं कि हमारे मन पर आप नजर रखें, उसकी गतिविधियां आपकी दृष्टि के अनुसार हो। ताकि हमारे भीतर भी अनासक्ति का गहरा भाव उद्भूत हो सके, हम वीतरागता की दिशा में आगे बढ़ सकें, भगवान महावीर की भांति हम भी केवल ज्ञान का वरण कर सकें। संभवतः आपको भी हमारी यह भेंट पसंद आएगी। आप इसे स्वीकार करें और हमें मार्गदर्शन प्रदान करते रहें।' साध्वीप्रमुखाजी ने इस अवसर पर स्वरचित कविता भी प्रस्तुत की। वह इस प्रकार है--

अभिनन्दन अभिषेक दिवस पर महाश्रमण का।
शान्तिदूत भारत सपूत के परिभ्रमण का ।।

१. बने सहायक अन्तरंग जब महाप्रज्ञ के,
खुली स्वयं दायित्व बोध की नई दिशाएं,
महाश्रमण पद श्रमण मुदित के साथ जुड़ा जब,
हुई उजागर प्रतिभा और विविध क्षमताएं,
बेमिसाल अध्याय विलक्षण आत्मरमण का ।।

२. सर्वप्रथम सेवाकेन्द्रों की प्रेरक यात्रा,
घोषित पावस- महोत्सवों का फिर सम्पादन,
जन्म सदी तुलसी की दीक्षा शतक बनाया,
करवाते प्रवचन में जिनवाणी आस्वादन,
बढ़ा सहज गौरव बीदासर महाचरण का ।।

३. है संशय संत्रास आज मानव के मन में,
प्रेम और विश्वास आपसी क्षीण हो रहा,
नैतिक मूल्यों की आस्था कमजोर हो गई,
औरों को ठगने में मनुज प्रवीण हो रहा,
करो सफल उपचार आर्य! इस अतिक्रमण का ।।

४. गूंज अहिंसा यात्रा की है भूमंडल में,
जिनशासन की यश सौरभ फैली अनन्त में,
मानवता की सेवा का प्रण है फौलादी,
परमात्मा का रूप निहारें महासन्त में,
बने कौन उपमान तुम्हारे अभिक्रमण का ।।

विलक्षण आचार्यप्रवर का शासनकाल और शासनशैली

मुख्यमुनिश्री ने अपने वक्तव्य में कहा--'आज परमपूज्य आचार्यप्रवर का नौवां पदाभिषेक दिवस है। इस अवसर पर चतुर्विध धर्मसंघ आचार्यप्रवर की अभ्यर्थना कर रहा है, स्तुति कर रहा है। आचार्यप्रवर का शासनकाल और प्रशासन शैली अपने आप में विशिष्ट हैं। आचार्यप्रवर अपने प्रत्येक कार्य को व्यवस्थित रूप में संपादित करते हैं। आचार्यप्रवर किसी समस्या का दूरदर्शितापूर्ण चिंतन के साथ समाधान प्रदान करते हैं। यही कारण है कि दीर्घकाल से चली आ रही कितनी-कितनी समस्याएं स्थायी रूप में समाहित हो गईं। आपकी अनुशासनशैली मृदुता और दृढ़तापूर्ण है। आप चतुर्विध धर्मसंघ की चित्तसमाधि के प्रति जागरूक रहते हैं। वृद्ध/अक्षम साधु-साध्वियों की चित्तसमाधि के लिए तो आप विशेष रूप से ध्यान देते हैं। श्रावक-श्राविकाओं की चित्तसमाधि के लिए भी आप बहुत ध्यान देते हैं। रुग्ण, अक्षम और वृद्ध गृहस्थों पर भी आप विशेष करुणा बरसाते हैं। धर्मसंघ की सुरक्षा और श्रीवृद्धि के लिए आप सतत सजग हैं। भैक्षवशासन आपकी शासना में निरंतर विकासोन्मुख है। धर्मसंघ की सार-संभाल के लिए आप कितनी लंबी पदयात्रा कर रहे हैं। पहली बार दर्शन करने वाले लोग आपके आकर्षण से बार-बार खींचे आते हैं। संवत्सरी एकता के लिए आप द्वारा किया गया निर्णय हमें बड़े हित के लिए स्वार्थ को त्यागने की प्रेरणा देता है।

आचार्यप्रवर धर्मसंघ के सदस्यों को साधना के क्षेत्र में आगे बढ़ा रहे हैं, उसके साथ-साथ आप उनके व्यक्तित्व को भी निखार रहे हैं। आप द्वारा निर्दिष्ट शनिवार की सामायिक अब त्यौहार बनती जा रही है। सुमंगल साधना के द्वारा आपने श्रावक-श्राविकाओं के जीवन के उतरार्द्ध को धर्ममय बनाने का पथ प्रशस्त किया है। आपके शासन में आगम संपादन का कार्य भी निरंतर चल रहा है। कितने आगम और आगमों से संबंधित ग्रंथ आपकी शासना में संपादित, व्याख्यायित रूप में प्रकाशित हो चुके हैं।

आज के दिन मैं यही मंगलकामना करता हूं कि हमें सुदीर्घ काल तक आपकी शासना प्राप्त होती रहे। आपकी शासना में धर्मसंघ चहुंमुखी विकास करता रहे। आपके गुण हमारे जीवन में भी संक्रान्त हों।'

धर्मसंघ के लिए महत्त्वपूर्ण है आज का दिन

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--

दाणाण सेट्ठं अभयप्पयाणं, सच्चेसु या अणवज्जं वयंति।
तवेसु या उत्तम बंभचेरं, लोगुत्तमे समणे णायपुत्ते।।

आज वैशाख शुक्ला दशमी है। भगवान महावीर का कैवल्य प्राप्ति दिवस है। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को महावीर जयन्ती का दिन आता है। एक दृष्टि से मैं मानता हूं कि भगवान महावीर के संदर्भ में महावीर जयन्ती की अपेक्षा आज का दिन बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज के दिन प्रभु महावीर को निष्पत्ति प्राप्त हुई थी। वर्षों या जन्मों की साधना के बाद मानों आज के दिन उसका प्रतिफल प्रभु महावीर को मिला और वे केवलज्ञानी बन गए। केवलज्ञानी बनने के बाद तो मानों मंजिल बहुत निकट हो जाती है। केवलज्ञान प्राप्त होने का अर्थ है अब आगे जन्म नहीं है, अब तो सिद्धावस्था ही प्राप्त होने वाली है।

प्रभु महावीर को लोकोत्तम कहा गया है। उनके लोकोत्तम होने का आधार मैंने आगम के संदर्भ में जानने का प्रयास किया। वे लोकोत्तम इसलिए थे, क्योंकि वे अभयदान देने वाले थे। जो व्यक्ति सभी प्राणियों को अभयदान दे देता है, वह व्यक्ति लोकोत्तम बन सकता है। अभयदान का अर्थ है अहिंसा की साधना। भगवान महावीर की अहिंसा की साधना मानों विशिष्टतम थी।

प्रभु महावीर के लोकोत्तम होने का दूसरा आधार है कि उनकी यथार्थ की साधना प्रकृष्ट और निरवद्यतायुक्त थी। जो आदमी निरवध याथार्थ्य की साधना कर लेता है, उसके लिए संकल्पित बन जाता है, वह व्यक्ति लोक में उत्तम पुरुष बन सकता है।

प्रभु महावीर के लोकोत्तम होने का तीसरा आधार है कि उनकी इन्द्रिय संयम की साधना प्रकृष्ट थी। जो आदमी इन्द्रिय संयम की विशेष साधना कर लेता है, वह लोकोत्तम बन सकता है।

हमारे जीवन में अभय का विकास हो। हम दूसरों को अभयदान दें और स्वयं भी अभय रहने की साधना करें। हम निरवद्यता से संयुक्त याथार्थ्य का आचरण करें। हमारी इन्द्रिय संयम की साधना आगे बढ़े।

भगवान महावीर ने कितने जन्मों में साधना की थी। अन्तिम भव में भी कितनी साधना की थी। कितने उपसर्ग आए, कठिनाइयां आईं, प्रभु ने उन्हें किस प्रकार सहन किया। प्रभु महावीर के इस कैवल्य कल्याणक दिवस पर मैं प्रभु को श्रद्धा के साथ नमस्कार करता हूं।

आज का दिन जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के इतिहास में भी दर्ज है। यह दिन मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। आज के दिन धर्मसंघ ने आचार्य महाप्रज्ञजी द्वारा आदिष्ट, निर्दिष्ट, मनोनीत व्यवस्था का औपचारिक संपादन करते हुए मुझे मानों शासन की अमल धवल चद्दर ओढ़ाई थी। सरदारशहर के गांधी विद्या मंदिर के प्रांगण में धर्मसंघ ने आचार्य महाप्रज्ञजी के निर्णय को औपचारिक रूप देते हुए मुझे दायित्व की चद्दर ओढ़ाई थी। मूलतः तो गंगाशहर में भाद्रव शुक्ला द्वादशी को आचार्य महाप्रज्ञजी ने अपने करकमलों से मुझे भावी दायित्व की चद्दर ओढ़ाई थी। इस प्रकार उन्होंने अपना उत्तराधिकार मेरे लिए स्थापित किया था। मुझे परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी के चरणोपपात में रहने का अवसर मिला। उनका दायित्व मुझमें संक्रान्त हुआ।

यह दायित्व अपने आपमें बहुत महत्त्वपूर्ण है। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ में वैधानिक व्यवस्था के अनुसार सर्वोच्च सत्ताधीश या सर्वेसर्वा या सर्वोच्च व्यवस्थापक-निर्णायक आचार्य होते हैं। उनके ऊपर व्यक्ति के रूप में कोई नहीं होता। समग्र दृष्टि से विचार करूं तो मेरा यह मानना है कि आचार्य से भी

बड़ा हमारा शासन है। मुझे ऐसा लगता है कि मैं भी शासन से बड़ा नही हूं, शासन के अंतर्गत ही हूं। शासन से बड़ा कोई नहीं है। आचार्य भी शासन की छत्र छाया में हैं। हमारा भैक्षवशासन मानों कल्पतरु है। इसकी शीतल और मनहर छाया में हम सब जी रहे हैं, साधना कर रहे हैं। परमपूज्य आचार्य भिक्षु ने इस संघ का प्रादुर्भाव किया। उनके उत्तरवर्ती आचार्यों ने इसे संरक्षित और संपोषित करने का प्रयास किया। इसका करीब २५७ वर्षों का इतिहास है।

वैधानिक व्यवस्थानुसार देखें तो आचार्य महाप्रज्ञजी ने मुझे संघ के संचालन का सर्वोच्च दायित्व प्रदत्त किया था। वैसे अंतर्गभित रूप में देखें तो संभवतः गुरुदेव तुलसी का भी इसमें दृष्टिपात था, चिन्तन-मनन था। दोनों गुरुओ के संयुक्त चिंतन, मंथन, विचार की निष्पत्ति हुई कि यह दायित्व मुझे सौंपा गया।

यह विशेष बात कि मुझे दो-दो गुरुओं के पास रहने का मौका मिला। केवल पास में रहने का ही नहीं, सक्रियता और अन्तरंगता से जुड़ने का भी मौका मिला। गुरुदेव तुलसी का अपना क्या चिंतन रहा होगा। गुरुदेव का वि.सं. २०४१ का चतुर्मास जोधपुर में था। गुरुदेव जोधपुर पधारे और मुझे फरमाया कि सुबह का उपदेश तुम दिया करो। जोधपुर के पूरे चतुर्मास में गुरुदेव के प्रवचन से पहले उपदेश देने का अवसर मुझे मिला। वह मेरे लिए शिक्षण-प्रशिक्षण का एक क्रम था। बाद में गुरुदेव जसोल मर्यादा महोत्सव से पूर्व बालोतरा पधारे। मैं भूल न करूं तो बालोतरा मेरा संघीय कार्यों से जुड़ने का क्षेत्र है। बालोतरा में एक बार पूर्व रात्रि में गुरुदेव ने मुझे याद फरमाया। युवाचार्य महाप्रज्ञजी भी वहीं विराजमान थे। गुरुदेव तुलसी ने मुझे लिखने का कार्य प्रदान करते हुए फरमाया--'हम जब भी तुम्हें बुलाएं, तुम लिखने की सामग्री अपने साथ में लेकर आया करो।' मानों उसके माध्यम से गुरुदेव ने मुझे किसी रूप में व्यवस्था कार्य में नियोजित कर दिया। बाद में गुरुदेव ने वि.सं. २०४२ के उदयपुर मर्यादा महोत्सव के समारोह में युवाचार्य महाप्रज्ञजी के आंतरिक कार्यों में सहयोग देने के लिए मुझे विधिवत रूप में नियुक्त किया था। फिर उन्होंने मुझे और आगे बढ़ाते हुए महाश्रमण के रूप में नियुक्त किया अर्थात गुरुदेव तुलसी ने मुझे किस प्रकार आगे बढ़ाया। उनका क्या दृष्टिकोण था। कैसे वे मुझे सोपानों पर क्रमशः चढ़ाते गए।

परमपूज्य आचार्य महाप्रज्ञजी ने गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण के बाद यथाशीघ्र मुझे युवाचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर दिया था। उन्होंने मुझे दायित्व की चद्दर गंगाशहर में ओढ़ाई थी। फिर तो मुझे उनके पास रहने का बहुत मौका मिला और खुले रूप में संघीय कार्यों से जुड़ने का मौका मिला। मैं इस माने में सौभाग्यशाली हूं कि मेरे निर्माण में दो-दो आचार्यों का योगदान रहा।

किसी भी कार्य की पृष्ठभूमि बड़ी महत्त्वपूर्ण होती है। ऊपर की मंजिलों और ध्वजा को देखा जा सकता है, किन्तु नींव का भी बहुत महत्त्व होता हैं। वह उस इमारत का आधार होता है। एक बड़ी नियुक्ति होती है, वह महत्त्वपूर्ण होती है, किन्तु इस नियुक्ति की पृष्ठभूमि में कितना श्रम लगा होगा, कितना तप रहा होगा, कितनों का हाथ लगा होगा, उसका बड़ा महत्त्व होता है। मैं व्यवहार के धरातल पर देखूं तो परमपूज्य गुरुदेव तुलसी का मुझे वर्षों तक सान्निध्य मिला। उन्होंने मेरे निर्माण पर बड़ा ध्यान दिया। बच्चा था, तब से उन्होंने मुझ पर ध्यान देना शुरू किया होगा। लंबे समय तक उन्होंने मुझे अपने साये में रखा। विभिन्न कार्यो में जोड़कर और प्रेरणाएं देकर अपने तरीके से मुझे तराशने और घड़ने का प्रयत्न किया। गुरुदेव ने मुझे युवाचार्य महाप्रज्ञजी के साथ जोड़ दिया। आचार्य महाप्रज्ञजी का भी कितना श्रम मेरे निर्माण में रहा। उनके पास मैं विद्यार्थी के रूप में भी रहा। उन्होंने अपनी ओर से मुझे कितना कुछ देने का प्रयास किया। दो-दो गुरुओं के सान्निध्य का जो अवसर मुझे मिला, आज वह सान्निध्य प्रत्यक्ष रूप में मेरे सामने नहीं

है, किन्तु उन्होंने जो कुछ दिया है, वह अपने आपमें महत्त्वपूर्ण है। आज प्रत्यक्ष में उनका साया/सान्निध्य मुझे प्राप्त नहीं है, अप्रत्यक्ष की स्थिति तो अप्रत्यक्ष के वेत्ता ही जान सकते हैं।

आज का दिन हमारे धर्मसंघ के लिए भी महत्त्वपूर्ण है कि आज के दिन धर्मसंघ के महाग्रंथ का ग्यारहवां अध्याय शुरू हुआ था, जो आगे चलता जा रहा है और चलता भी रहे।

हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखाजी कितने वर्षों से अपनी सेवाएं दे रही हैं। गुरुदेव तुलसी के द्वारा मनोनीत होकर उनके समय में सेवा दी, आचार्य महाप्रज्ञजी के समय सेवा की और वर्तमान में तीसरी पीढी की सेवा कर रही हैं। हमारे धर्मसंघ में साध्वीप्रमुखा का भी महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। वे किस प्रकार आचार्यों की सेवा में और साध्वियों की व्यवस्था में अपना योगदान देती हैं। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभाजी लंबे समय से अपनी सेवा दे रही हैं। आज भी सुदूर क्षेत्रों की यात्रा में हमारे साथ हैं। जीवन के आठवें दशक के उत्तरार्द्ध में भी आप मेरे साथ-साथ पधार रही हैं। यह भी बहुत अच्छी बात है। आपका अपना अध्ययन, वक्तृत्व और वैदुष्य है, तीन पीढियों के संघीय अनुभव हैं। धर्मसंघ के एक प्रौढ़ व्यक्तित्व के रूप में आप अभी गुरुकुलवास में विराजमान हैं। गुरुकुलवास में वर्तमान में दीक्षा पर्याय में सबसे बड़े साध्वीप्रमुखाजी हैं।

हमारे धर्मसंघ के साधु-साध्वियां, समणश्रेणी के सदस्य और श्रावक-श्राविकाएं खूब अच्छा विकास करते रहें। हम इस माने में भाग्यशाली हैं कि इतना सुन्दर धर्मसंघ हमें साधना के लिए प्राप्त है।

पट्टोत्सव के इस अवसर पर कितने लोगों ने अपनी अभिव्यक्तियां दी हैं। कई मौन भाव में भी मंगलभावनाएं दे रहे हो सकते हैं। कई अभी बोलने वाले होंगे। मेरा इतना वर्धापन किया गया, किया जा रहा है, मैं आप सबका आभारी हूं कि आप मेरे प्रति स्नेह भाव रखते हुए मुझे वर्धापित कर रहे हैं।'

साध्वीप्रमुखाजी ने पूज्यप्रवर के प्रवचन के उपरान्त प्रसंगवश कहा---'परमपूज्य आचार्यप्रवर ने कल भी अपने प्रवचन में फरमाया कि मैं सबका आभारी हूं कि मेरे लिए सब इतनी मंगलभावनाएं कर रहे हैं। आज भी इसी बात को दोहराया। गुरुदेव! मेरा विनम्र निवेदन हैं कि आभारी तो हम हैं। आप हमें बोलने का अवसर प्रदान कर रहे हैं, विकास करने का अवसर प्रदान कर रहे हैं, प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं, साधना में आगे बढ़ा रहे हैं। आप तो हमारी मंगलभावनाओं को स्वीकार कर युगों-युगों तक धर्मसंघ को और आगे बढ़ाते रहें।'

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा--'हम चेन्नई की ओर आगे बढ़ रहे हैं। चेन्नई से इतने लोग आए हैं। आज व्यवस्थाओं के दायित्व का हस्तांतरण भी होने वाला है। चेन्नई में खूब अच्छा रहे। विशाखापट्टनम् में आज दसवें दिन का प्रवास हो रहा है। यहां भी खूब अच्छा रहे।'

'मोहन वाटिका' के द्वारा मोहन (आचार्यश्री महाश्रमण) के चरणों में भावसुमन समर्पित

आचार्यप्रवर के ५७वें जन्मोत्सव एवं नौवें पट्टोत्सव के उपलक्ष में साध्वी सप्तक--साध्वी राजुलप्रभाजी, साध्वी चैतन्यप्रभाजी, साध्वी पुष्पप्रभाजी, साध्वी सिद्धार्थप्रभाजी, साध्वी शरदयशाजी, साध्वी समताप्रभाजी और साध्वी ऋद्धिप्रभाजी की ओर से हस्तलिखित पत्रिका पूज्यचरणों में उपहृत की गई। 'मोहन वाटिका' नामक इस पत्रिका में तीन लोक, अढाई द्वीप, जंबू द्वीप तथा भरत क्षेत्र आदि को आधार बनाकर विविध रूपों में पूज्यप्रवर की अभ्यर्थना की गई है। इस पत्रिका के निर्माण में साध्वी सप्तक के साथ साध्वी सुदर्शनप्रभाजी व साध्वी चारित्रयशाजी का भी श्रम रहा। कार्यक्रम में पत्रिका के समर्पण से पूर्व साध्वी सप्तक में से उपस्थित साध्वियों ने गीत का संगान किया।

पूज्यप्रवर के प्रवास स्थल आई. आई. ए. एम. इंस्टिट्यूट के चेयरमेन श्री रवीन्द्र अलवर दास ने

कहा--'मैं अभिभूत हूं कि आचार्य महाश्रमणजी जैसी परम पवित्र आत्मा का दस दिन का प्रवास हमारे प्रांगण में हुआ। आपके जन्मोत्सव और पदाभिषेक दिवस का भव्य आयोजन भी हमारे आंगन में हुआ। यह दुर्लभ अवसर प्रदान करने हेतु मैं आपके चरणों में कृतज्ञता अर्पित करता हूं।

कार्यक्रम में अहिंसा यात्रा की व्यवस्थाओं के दायित्व हस्तांतरण का उपक्रम भी रहा। इस उपक्रम के अंतर्गत विशाखाट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं ने यात्रा व्यवस्थाओं का दायित्व चेन्नई प्रवास व्यवस्था समिति के कार्यकर्ताओं को सौंपा। इस उपक्रम के अंतर्गत विशाखाट्टनम् प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री तिलोकचन्द हिरावत तथा चेन्नई प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष श्री धर्मचंद लूंकड़ ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। पूज्यप्रवर के मंगलपाठोच्चारण के पश्चात् दायित्व के प्रतीक जैन ध्वज के माध्यम से हस्तांतरण का उपक्रम संपादित हुआ।

द्विदिवसीय वर्धापना कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया। संघगान के साथ कार्यक्रम परिसंपन्न हुआ। जन्मोत्व तथा पट्टोत्सव के संदर्भ में हजारों लोग विशाखापट्टनम् पहुंचे। वक्ताओं आदि की लंबी सूची को देखते हुए दोनों दिनों के मुख्य प्रवचन कार्यक्रम प्रातः करीब ८.१५ बजे से प्रारंभ हुए। जन्मोत्सव का कार्यक्रम करीब १२.४१ बजे तथा पट्टोत्सव का कार्यक्रम लगभग १.०० बजे तक चला।

आज सायंकाल परमाराध्य आचार्यप्रवर ने विशाखापट्टनम् स्थित आई. आई. ए. एम. से कोठारी भवन की ओर प्रस्थान किया। विहार के दौरान अनेक लोगों को अपने-अपने घरों/व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के आसपास पूज्यप्रवर के दर्शन और मंगलपाठ श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पूज्यप्रवर एक अक्षम श्रद्धालु महिला को दर्शन देने उसके घर में पधारे। आचार्यप्रवर का यह अनुग्रह उसके परिजनों को कृतार्थता की अनुभूति करा रहा था। विहार के प्रांरभ में आतप बरसाने वाला सूर्य क्रमशः ढलता गया। फलस्वरूप मौसम भी सुहावना बनता गया। करीब ४.७ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर ललितानगर स्थित कोठारी भवन में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। यह स्थान विशाखाट्टनम् तेरापंथ समाज की धार्मिक गतिविधियों के संचालन का प्रमुख केन्द्र रहा है। अपने आराध्य को अपने आंगन में पाकर छापर निवासी विशाखाट्टनम् प्रवासी भौमसिंह,लक्ष्मीपत, निर्मल, नरेश कोठारी परिवार अतिशय आह्लादित और उल्लसित था।

पापों से बचो

२६ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः विशाखाट्टनम् के कोठारी निवास से एन.ए.डी. जंक्शन (विशाखापट्टनम्) की ओर प्रस्थान किया। इस अवसर पर विशाखाट्टनम्वासी बड़ी संख्या में उपस्थित थे, किन्तु पूज्यप्रवर के प्रवेश के अवसर पर उनके मुख पर थिरकने वाली प्रसन्नता का स्थान कुछ मायूसी ने ले लिया था। इस अवसर पर विशेष रूप से उपस्थित चेन्नई के सैंकड़ों लोगों के चेहरों पर आज प्रसन्नता और उल्लास दिखाई दे रहा था। ऐसा हो भी क्यों नहीं, करीब आधी सदी बाद उनके आराध्य उनके प्रवास क्षेत्र की ओर अभिमुख जो बने थे। पूज्यप्रवर विशाखाट्टनम् और चेन्नई-- दोनों क्षेत्रो के श्रद्धालुओं पर आशीषवृष्टि करते हुए गंतव्य की और गतिमान थे। करीब ७.५ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर एन.ए.डी. जंक्शन में स्थित उमीया भवन में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा--'कर्मवाद का सिद्धांत हमारे जीवन का बड़ा आधार है। व्यक्तित्व के निर्माण में कर्मवाद का मुख्य आधार होता है। जैन धर्म में आठ कर्म बताए गए हैं--ज्ञानावरणीय, दर्शनावरणीय, वेदनीय, मोहनीय, आयुष्य, नाम, गोत्र और अन्तराय। कर्मों के आधार पर आदमी के जीवन की सूक्ष्मतम व्याख्या की जा सकती है।

आत्मा शाश्वत है, संसारी आत्मा एक जन्म के बाद दूसरा जन्म ग्रहण करती है। आज तक सभी आत्माओं ने अनंत-अनंत जन्म ले लिए। किसका कहां जन्म होगा, इसमें भी पूर्वकृत कर्मों की बड़ी भूमिका होती है।

आदमी जैसा कर्म बंध करता है, वैसा उसे फल मिल जाता हैं। यदि पुण्य का बल साथ में होता है तो जंगल में भी मंगल हो जाता है। पुण्य आदमी को कष्ट की स्थिति से बचा सकते हैं। पाप का उदय है तो ठाठ-बाट में भी कठिनाई की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। आदमी को पाप कर्मों के बंधन से अपना बचाव करना चाहिए, ताकि आत्मा शुद्ध रहे और उसे आगे कष्ट भी न भोगना पड़े।'

गाजुवाका में पावन पदार्पण

२७ अप्रेल। परमपूज्य आचार्यप्रवर ने प्रातः एन.ए.डी. से गाजुवाका की ओर प्रस्थान किया। गत कल और आज का पूरा विहार पथ विशाखाट्टनम् के अतंर्गत ही था। मार्ग की स्वच्छता भी इस बात को परिपुष्ट करती-सी प्रतीत हो रही थी। सड़क के निकटस्थ वृक्षावली और आकाश में विहरण कर रहे बादलों के कारण यत्र-तत्र आतप से बचाव भी हो रहा था, किन्तु वातावरण में व्याप्त उमस शरीर को पसीने से नहला रही थी। पूज्यप्रवर के गाजुवाका क्षेत्र में पदार्पण से गाजुवाका में प्रवासित २८ तेरापंथी परिवारों का उल्लास चरम पर था। हर और प्रसन्नतामय वातावरण था। बुलन्द जयघोषों में श्रद्धालुओं का उल्लास मुखरित हो रहा था। लगभग ६.२ कि.मी. का विहार कर पूज्यप्रवर गाजुवाका में स्थित सूर्य तेज स्कूल में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के ऑनर और प्रिंसिपल श्री रविप्रकाश ने पूज्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम से पहले बृहत् विशाखाट्टनम् के पूर्व मेयर श्री पुलसा जनार्दनराव, बृहत् विशाखाट्टनम् नगरपालिका संघ के पूर्व कॉर्पोरेटर श्री एन. जे. स्टालिन (सी.पी.आई. पार्टी) तथा श्री पल्ला श्रीनिवास (तेलगुदेशम पार्टी) ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन पथदर्शन प्राप्त किया।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा-- 'आदमी के जीवन में गुरु का महत्त्वपूर्ण स्थान होता है। गुरु दो प्रकार के होते हैं- शिक्षा गुरु और धर्म गुरु। विद्यालय आदि में पढाने वाले शिक्षकों को शिक्षा गुरु कहा जा सकता हैं। धर्मगुरु त्यागी होने चाहिए। शिष्य का कर्त्तव्य होता है कि वह गुरु की शिक्षाओं पर ध्यान दे। अनुशास्ता गुरु का कोई आदेश हो जाए तो उस पर जागरूकता के साथ ध्यान देना चाहिए।

गुरु की आज्ञा के बिना किए गए ध्यान, त्याग, तप, अनुप्रेक्षा, इन्द्रिय संयम, आगम स्वाध्याय आदि का अधिक महत्त्व नहीं होता। अविनय के कारण गुरु की दृष्टि के विपरीत कोई कार्य नहीं करना चाहिए। गुरु की दृष्टि में सुख की सृष्टि होती है। गुरु की आज्ञा के बिना किया गया कार्य नुक्सानदेह भी हो सकता हैं। गुरु की दृष्टि के अनुरूप कार्य करने वाला शिष्य विनीत होता है। गुरु कभी कड़ा उलाहना दे दें तो भी उनके प्रति विनय का भाव रखना चाहिए। गुरु की आशातना से मोक्ष प्राप्त नहीं हो सकता। अनाबाध सुख के आकांक्षी व्यक्ति को गुरु कृपा के अभिमुख रहना चाहिए। गुरु कृपा से व्यक्ति बहुत विकास कर सकता है। गुरु से दूर रहते हुए भी मन ही मन गुरु की आराधना की जा सकती हैं। समर्पण में कोई शर्त नहीं होती। अच्छा समर्पण वहां हो सकता है, जहां 'तो' 'अगर' 'मगर' 'यदि' आदि न हों।'

कार्यक्रम में विशेष रूप से उपस्थित स्थानीय विधायक आदि गणमान्य व्यक्तियों ने पूज्यप्रवर की प्रेरणा से अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार किए।

गाजुवाका तेरापंथ समाज की महिलाओं ने स्वागत गीत का संगान किया। श्री नरेन्द्र बैंगानी, श्री बंशीलाल छाजेड़, श्री जतनलाल श्यामसुखा, श्री दीपक छाजेड़, श्रीमती प्रियंका गिड़िया तथा श्री विमल सेठिया ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी भावाभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों ने पूज्यप्रवर के स्वागत में अपनी प्रस्तुति दी।

स्थानीय विधायक श्री पल्ला श्रीनिवास राव गारू ने कहा--'मैं शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी का गाजुवाका आगमन पर स्वागत-अभिनंदन करता हूं। जब-जब संसार में अंधकार छाने लगता है, तब-तब कोई दिव्य पुरूष इस धरती पर अवतरित होता है। भगवान महावीर, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द जैसे महापुरुषों की श्रृंखला का एक महिमा मंडित नाम है आचार्यश्री महाश्रमण। आप अपनी इस यात्रा के माध्यम से मानव मन के अंधकार को दूर कर प्रकाश फैलाने आए हैं। हमारे मुख्यमंत्रीजी श्री चन्द्रबाबू नायडू आपके आगमन की बहुत उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहे हैं। गुरुजी! आपके आदेश से आज मैंने शराब, सिगरेट आदि नशीले पदार्थों का सेवन न करने का संकल्प लिया है। आपके आशीर्वाद से मैं इसे दृढ़ता से निभाऊंगा।'

बृहत विशाखापट्टनम् के पूर्व कॉपोरेटर मोहम्मद रफी ने कहा--'गुरुजी! आप हमारे यहां तशरीफ लाए हैं, इसके लिए मैं तहेदिल से आपका शुक्रिया अदा करता हूं। आपने अभी जो हमें पैगाम दिया, उससे इंसान को शांति मिलती है। आपका आशीर्वाद हम पर बना रहे।'

सूर्य तेज पब्लिक स्कुल के ऑनर श्री रविकुमार ने कहा--'आज के युग में पूरे विश्व में मानवीय मूल्यों का ह्रास हो रहा है। श्रमण संस्कृति उन्नायक, आचार्य परम्परा के दिव्य मणि, महाव्रतों की मेरु जैसी शक्ति से सम्पन्न, अगाध ज्ञान और गांभीर्य के धारक, महान परिव्राजक तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का अपनी अहिंसा यात्रा के दौरान आंध्रप्रदेश और हमारे इस प्रांगण में पधारना हमारे लिए अत्यन्त सौभाग्य की बात है। आप के पधारने से हमारा विद्यालय पावनधाम बन गया। इस हेतु सम्पूर्ण विद्यालय परिवार आपका बहुत-बहुत आभारी है। आपके इस महान अभियान को फैलाने के लिए हम अनवरत प्रयास करते रहेंगे।'

गाजुवाका विशाखाट्टनम् शहर का ही एक हिस्सा है, किन्तु शहर के जिस भाग में अधिकांश तेरापंथी परिवार रहते हैं, उससे इस क्षेत्र की दूरी करीब २०-२५ कि.मी. है। दूरी के कारण वहां संचालित होने वाली धार्मिक, सामाजिक गतिविधियों में गाजुवाकावासियों का जुड़ाव कम ही हो पाता है। इस दृष्टि से आज गाजुवाका में तेरापंथी सभा का गठन किया गया। नवगठित सभा के अध्यक्ष व अन्य सदस्यों ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर मंगलपाठ का श्रवण किया।

आपके आगमन से पवित्र हुआ हमारा प्रांगण

२८ अप्रेल। परमपूज्य आचार्यप्रवर प्रातः गाजुवाका से मन्तरीपालम की ओर प्रस्थित हुए। पूज्यप्रवर एक अक्षम श्रद्धालु महिला को दर्शन देने उसके घर में पधारे। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात होकर वह महिला और उसके परिजन धन्यता की अनुभूति कर रहे थे। आसपास के कुछ घर भी पूज्यचरणों से पावनता को प्राप्त हुए। विहार के दौरान वाइजाग स्टील प्लांट के मुख्यद्वार के निकट लोगों ने बताया कि यह प्लांट सैंकड़ों एकड़ में विस्तीर्ण है। यह परिसर इतना बड़ा है कि इसमें कई गांव समाहित हो सकते हैं।

विहार पथ के आसपास खड़े हरे-भरे वृक्षों से युक्त पहाड़ मार्ग को रमणीयता प्रदान किए हुए

Postal Reg. No. DL (C)-01/1243/2018-20 Wed.-Thu.
L.No.-U (C) 200/2018-2020
Licence to Post without Pre-payment
Regd. No. 61758/95 Office of Posting N.D.P.S.O.

थे। विहार के दौरान अगनामपुरी के ग्रामीण पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीष से लाभान्वित हुए। पूज्यप्रवर करीब १२.० कि.मी. का विहार परिसंपन्न कर मन्तरीपालम स्थित नोबल इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस एण्ड टेक्नोलॉजी में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अन्तर्गत अपने पावन प्रवचन में कहा--'उपकार दो प्रकार के होते हैं--लौकिक और लोकोत्तर। दूसरे शब्दों में इन्हें देहिक और आत्मिक या भौतिक और आध्यात्मिक उपकार भी कहा जा सकता है। किसी को हृदय परिवर्तन कर त्याग, संयम पथ पर आगे बढ़ाना आत्मिक, लोकोत्तर और आध्यात्मिक उपकार है। किसी असंयमी भूखे को भोजन कराना, पैसा देना आदि दैहिक, लौकिक और भौतिक उपकार होता है। दूसरों को कष्ट या पीड़ा देना पाप है। आदमी दूसरों पर उपकार कर सके अथवा नहीं, दूसरों को कष्ट न दे, यह वांछनीय है।

तीर्थंकर कितने उपकारी होते हैं। वे स्वयं तीर्ण होते हैं और दूसरों को तारने वाले होते हैं। स्वयं मुक्त और दूसरों को मुक्ति का पथ दिखाने वाले होते हैं। स्वयं बुद्ध और दूसरों को बौधिक प्रदान करने वाले होते हैं।'

एन.आई.एस.सी. कॉलेज के चेयरमेन श्री बलुसु आनंदराव गारु ने कहा--'अहिंसा यात्रा प्रणेता आचार्यश्री महाश्रमणजी के आगमन से हमारा विद्यालय प्रांगण पवित्र हो गया। हम आपका स्वागत कर स्वयं को धन्य मानते हैं। मैं भगवान से यही प्रार्थना करता हूं कि आपकी यात्रा सफल हो, मंगलमय हो।'

पूज्यप्रवर ने कार्यक्रम में उपस्थित शिक्षकों और विद्यार्थियों को अहिंसा यात्रा के संकल्प स्वीकार करने का आह्वान किया तो उन्होंने अपने स्थान पर खड़े होकर पूज्यप्रवर से संकल्पत्रयी स्वीकार की।

नवीन घोषित चतुर्मास

१. मुनिश्री महेन्द्रकुमारजी - ठाणे
२. मुनिश्री किशनलालजी - मोमासर
३. मुनि प्रसन्नकुमारजी - कामरेज (मुनिश्री संजयकुमारजी के संयुक्त)
४. साध्वी संघमित्राजी - श्रा.भा. पीतमपुरा
५. साध्वी कनकश्रीजी (लाडनूं) - शाहदरा, दिल्ली
६. साध्वी धनश्रीजी - जयपुर

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001
मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com
ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा पवन प्रिंटर्स, जे-9 नवीन शाहदरा, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला